विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग के चतुर्थ दीक्षांत समारोह में महामहिम राज्यपाल, श्री सैय्यद सिब्ते रज़ी का अध्यक्षीय भाषण

दिनांक 22 मई, 2007

विनोबा भावे विश्वविद्यालय के चतुर्थ दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि माननीय केन्द्रीय उर्जा मंत्री, श्री सुशील कुमार शिन्दे जी, राज्य की प्रथम महिला श्रीमती चॉद फरहाना, राज्य के मुख्यमंत्री श्री मधु कोड़ा, शिक्षा मंत्री श्री बंधु तिर्की, राज्य के माननीय मंत्रीगण, माननीय सांसद एवं विधायकगण, कुलपति डॉ. एम. पी. सिंह, प्रतिकुलपति डॉ. ज्योतिलाल उरांव, कुलसचिव डा0 सतीश्वर चन्द्र सिन्हा, उपस्थित शिक्षाविद्, केन्द्र एवं राज्य सरकार के वरीय पदाधिकारी, विनोबा भावे विश्वविद्यालय के सभी प्राचार्य एवं शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मी, अभिभावकगण, उपाधि प्राप्त करनेवाले विद्यार्थीगण, प्रेस एवं मीडिया के दोस्तो !

विनोबा भावे विश्वविद्यालय के चौथे दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता करते हुए मुझे अपार हर्ष और आनन्द का एहसास हो रहा है। इस विश्वविद्यालय से सम्बन्धित सभी लोगों के लिए यह दिवस उल्लास का दिवस है। मैं इस अवसर पर आप सभी को बधाई देना चाहुंगा, विशेषकर उन विद्यार्थियों को जो आज उपाधियां प्राप्त कर रहे हैं । जब मैं पण्डाल पर नज़र

डालता हुँ, तो मुझे विभिन्न रंगों के गाउन पहने विद्यार्थी उत्साह से भरे दिखाई देते हैं। इसमें दो राय नहीं कि यह दिन उनके जीवन का और उनके अभिभावकों के जीवन का ऐतिहासिक दिन है। इस विश्वविद्यालय का कुलाधिपति होने के नाते मुझे भी इस क्षण पर गर्व हो रहा है।

इस दीक्षान्त समारोह का महत्त्ता तब और बढ़ जाती है जब हम आज के मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री सुशील कुमार शिन्दे को अपने बीच उपस्थित पा रहे हैं। श्री शिन्दे की इस दीक्षान्त समारोह में गौरवमयी उपस्थिति, सम्पूर्ण विश्वविद्यालय के लिए एवं कुलाधिपति के रूप में मेरे लिए, हर्ष एवं गौरव की बात है। माननीय मुख्य अतिथि श्री सुशील कुमार शिन्दे का स्वच्छ एवं प्रेरणादायक राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन सर्वविदित है। एक लोकप्रिय जननेता के रूप में प्रतिष्ठापित श्री शिन्दे महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एवं आंध्रप्रदेश के राज्यपाल के पदों को सुशोभित कर चुके हैं। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के रूप में राज्य की शिक्षा के स्तर के उन्नयन एवं उसमें गुणात्मक सुधार हेतु इन्होंने कई सार्थक प्रयास किये हैं एवं कई नयी योजनाएं भी बनायी। आपके कुशल प्रशासनिक अनुभव

के कारण ही आपको केन्द्रीय उर्जा मंत्री का गुरूत्तर भार सौंपा गया। मुझे यह बताते हुए हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है कि जब मैने दिल्ली में इनसे मुलाकात कर विनोबा भावे विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में मुख्य अतिथि बनने का आग्रह किया तो अपनी तमाम व्यस्ताताओं के बावजूद, इन्होंने नवसृजित राज्य झारखण्ड चलने पर अपनी स्वीकृति तुरंत प्रदान की। आज इनके प्रभावशाली एवं उत्कृष्ट अभिभाषण को आपने सुना और मैं समझता हूँ कि इससे निश्चित रूप से हमारे सम्पूर्ण विश्वविद्यालय ही नहीं अपितु पूरे राज्य के शिक्षा जगत में एक नया संदेश जायेगा।

झारखण्ड राज्य में विकास की असीम संभावनाएँ है। यहाँ प्राकृतिक एवं खनिज संसाधन प्रचुर मात्रा में मौजूद है। इस प्रदेश की जीवंत कला–संस्कृति ने इसे अनुपम सौंदर्य और समृद्धता प्रदान की है। हमें अपनी बौद्धिक क्षमता व कुशलता से इसे और अधिक सुंदर व समृद्ध बनाना है क्योंकि बिना बौद्धिक संपदा के हम प्राकृतिक और खनिज संपदा का कुशलतापूर्वक समुचित उपयोग नहीं कर सकते। हमारी पृथ्वी के गर्भ में जो अपार खनिज संपदा है, जिससे हमारा विकास हो सकता है, उसे जानने और समझने के साथ ही उसका

कुशलतापूर्वक उपयोग करने के लिए भी ज्ञान की जरूरत है। विश्वविद्यालय की बड़ी भूमिका इस अर्थ में है कि वह ज्ञान और सूचना के विशाल भंडार से सुपरिचित होते हुए उसमें कितना नया और सार्थक जोड़ पाता है।

विनोबा भावे विश्वविद्यालय भूदान यज्ञ के प्रणेता संत विनोबा भावे के नाम पर स्थापित है, जिन्होंने हृदय परिवर्तन की सहायता से सामाजिक वर्ग वैषम्य को समाप्त कर जन–जन के हृदय में परस्पर बंधुत्व की भावना भर कर एक नवीन, आर्थिक क्रांति का सूत्रपात एवं सफल संचालन किया था। हृदय परिवर्तन के बल पर सामाजिक ढाँचे में इतना बदलाव पूरी दुनिया के लिए एक अनोखा उदाहरण था। प्रेम, मैत्री, सहयोग ,सहानुभूति एवं दान को सामाजिक परिवर्तन का हथियार बनानेवाले संत विनोबा भावे के विचार पूरे देश के लिए आज भी उतने ही प्रासंगिक तथा अनिवार्य है जितना उस समय थे। मुझे खुशी है कि संत विनोबा के नाम पर स्थापित यह विश्वविद्यालय अपने को उत्कृष्ट विश्वविद्यालय के रुप में विकसित कर रहा हैं।

राज्य का समग्र विकास शिक्षा के व्यापक प्रचार – प्रसार से ही सुनिश्चित किया जा सकता है। हमारे देश

में उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवाले युवाओं की संख्या काफी कम है। ऑकड़ों पर गौर करें तो उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवाले छात्र–छात्राओं की संख्या महज 6 से 7 फीसदी है, जबकि विकसित देशो में उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवाले छात्र–छात्राओं का प्रतिशत 40 है। हमें भारत को विकसित देशो की श्रेणी में लाने के लिए उच्चशिक्षा के क्षेत्र में दिलचस्पी दिखानी होगी।

राष्ट्पिता महात्मा गॉधी ने कहा है **“ To the last man in the last row.”.**

विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग हमारे पॉच विश्वविद्यालयों में एक महत्वपूर्ण विश्वविद्यालय है। झारखण्ड राज्य सन् 2000 में नवसृजित हुआ। राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों का कुलाधिपति होने का मुझे जब से अवसर प्राप्त हुआ है, मेरा प्रयास यही रहा है कि विश्वविद्यालयों में सत्र नियमित हो, सिन्डिकेट और सिनेट की बैठके अपने निर्धारित समय पर आहूत हो, परीक्षाफल समय से प्रकाशित हों, और विश्वविद्यालयों के पास जो भी इनफास्टक्चर उपलब्ध है उसका पूर्ण सदुपयोग हो। मुझे प्रसन्नता है कि इस क्षेत्र मे नयी राहे खुली हैं और पॉचों विश्वविद्यालयों में सत्र नियमित हो चुके हैं और सिन्डिकेट तथा सिनेट की बैठकें

नियमित रूप से होने लगी है। आज नये विश्वविद्यालय खोले जाने की जरुरत है इस क्षेत्र में राज्य सरकार ने सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में दो नये विश्वविद्यालय खोलने का फैसला किया है। मुझे खुशी है कि राज्य में एक निजी विश्वविद्यालय की भी स्थापना होने जा रहा है। मैं चाहूँगा कि विश्वविद्यालय पत्राचार के माध्यम से भी अपने–अपने कार्यक्षेत्र में पाठ्यकम चलाकर उच्च शिक्षा के विकास एंव प्रसार में अपनी महती भूमिका अदा करें। ज्ञान आधारित समाज में ही करोड़ों उपेक्षित लोगों का उदय सम्भव हैं, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी अवश्य होनी चाहिये क्योंकि लोगों के सहयोग के बिना समर्थ, चमकदार भारत की कल्पना नहीं की जा सकती है।

आज हम सबों को अधिक से अधिक सीखने की और नयी कार्य संस्कृति विकसित करने की जरूरत है। सीखना सबको है। एक अच्छा अध्यापक सदैव विद्यार्थी की भूमिका में होता है। सीखना और सिखाना एक दोहरी प्रकिया है और सीखने का कोई अंत नहीं है। विद्यार्थी निश्चित रूप से अपना कैरियर बनाये, अध्यापक भी उस दिशा में बढ़ें, पर हमें उस समाज के बारे में अवश्य सोचना चाहिए, जिसके हम अंग हैं। मेरी समझ

से निजी विकास के साथ सामाजिक विकास, भौतिक विकास के साथ बौद्धिक विकास और तकनीकी विकास के साथ कृषि विकास को जोड़कर ही हम सम्पूर्ण रुप से सार्थक कार्य कर सकते हैं। विकास के विविध रूप हैं और इस विश्वविद्यालय से हमें यह अपेक्षा करनी चाहिए कि वह अपने विकास के साथ सामाजिक विकास की ओर भी ध्यान देंगे और अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाह करेंगे।

मैं विश्वविद्यालय से उसके दृष्टिज्ञात विज़नरी होने की अपेक्षा करता हूँ। बिना दूरदृष्टि के हम आगे नहीं बढ़ सकते। विजन के साथ कर्म, निष्ठा, लगन, उद्यम, साहस, समर्पण आदि की भी आवश्यकता है। विजन को मूर्तरूप देने के लिए हमें रचनाशील मस्तिष्क पर सदैव ध्यान देना चाहिए और इस विश्वविद्यालय को नयी रचनाशीलता के साथ आगे बढ़ाना चाहिए। युवा सबसे अधिक रचनाशील होते हैं और किशोरावस्था, उमंग, उत्साह और छलांग लगाने की अवस्था है। संस्थाओं के साथ भी यही बात है। सपना देखना बहुत जरूरी है और विश्वविद्यालय के पास भी एक सपना होना चाहिए और उसे धरती पर सफलतापूर्वक उतारने के लिए समर्पण की भावना होनी भी चाहिए । विश्वविद्यालय को

नयी रचनाशीलता का केन्द्र बनना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति के भीतर जो रचनाशीलता छुपी हुई है उसकी तलाश करते हुए उसका विकास करना चाहिए। दूसरी मुख्य बात यह है कि दुनिया में जो कुछ उपलब्ध है, उसकी हमें जानकारी होनी चाहिए और अपने को हमेशा आगे बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। विश्वविद्यालय शिक्षा और ज्ञान का सबसे बड़ा केन्द्र है। मनुष्य का दिमाग महत्वपूर्ण है, लेकिन अब सूचना माध्यम भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। आज 'इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' को एक माइक्रोचिप्स में बंद किया जा सकता है। आज सूचनाओं को मनुष्य के दिमाग से लाखो–करोड़ों गुना अधिक मशीन में स्टोर किया जा चुका है। अब हम लाइब्रेरी से ग्लोबल लाइब्रेरी और ऑन लाईन लाइब्रेरी तक आ चुके हैं। यह गुणात्मक बदलाव का समय है। कम्प्यूटर के की–बोर्ड से उंगलियों का संबंध साधारण नहीं है। इससे दुनिया की सारी खिड़कियाँ खुल जाती है। इस विश्वविद्यालय में भी समृद्ध कम्प्यूटर और तकनीक केन्द्र अवश्य होना चाहिए। इसके साथ ही विश्वविद्यालय में नयी फैकल्टी खुले और पुरानी फैकल्टी मे नयी चमक हो, इस पर हमें अवश्य ध्यान देना चाहिए।

आज का युग ग्लोबलाईजेशन का युग है । हमें रोजगार परक शिक्षा को बढ़ावा देना होगा ताकि हमारे युवा विश्व की चुनौतियों के अनुरुप राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न रोजगारों में अपनी जगह बना सकें। शिक्षा केवल नौकरी प्राप्त करने का ही जरिया न बनकर स्वालंबी और आत्मनिर्भर बनने का माध्यम बने, इसके लिए विगत कुछ वर्षो में राज्य के विश्वविद्यालयों में नये व्यवसायिक पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गये है तथा व्यवसायिक शिक्षा पर जोर दिया गया है।

शिक्षा का मूल्य और नैतिकता से संबंध सदैव बना रहेगा। वास्तविक शिक्षा किसी को मूल्यरहित और अनैतिक नहीं बनाती है। शिक्षित समुदाय ही किसी भी समाज का पथ–प्रदर्शक होता है। समाज का नेतृत्व करने के लिए उच्चतर मूल्यों का निर्वाह करना आवश्यक है। आप जिस किसी भी क्षेत्र का चयन करें , आपको उस क्षेत्र में सर्वोत्कृष्टता प्राप्त करनी है और यह केवल श्रम और लगन से ही संभव है। छात्रों का उद्देश्य केवल परीक्षा देना और डिग्री लेना नहीं होना चाहिए। उन्हें अपने को सब तरह से सक्षम बनाना होगा जिससे वे इस क्षेत्र में ही नहीं बल्कि पूरे देश व विश्व

में कहीं भी असफल न हो। यह मेहनत, लगन, उद्यम और श्रम के बिना संभव नहीं है।

विश्वविद्यालय में एक सुन्दर और सही गति होनी चाहिए। हमारे सामने दिशाएँ साफ होनी चाहिए और स्वयं रास्ता बनाने की हममें क्षमता भी होनी चाहिए। विश्वविद्यालय के अध्यापकों को सच्चे अर्थों में शिक्षा के प्रति समर्पित होनी चाहिए। बिना अध्ययन के अध्यापन का कोई अर्थ नहीं है। शिक्षा की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। शोध का स्तर हमें ऊँचा उठाना होगा। उसकी गुणवत्ता पर ध्यान देना होगा। गुरू–शिष्य संबंध और परिवेश पर ध्यान देने की जरूरत है। बदलते हालात में इन सब में जीवंतता और गतिशीलता जरूरी है। शिक्षा सीमित अर्थ में जीवन के लिए तैयारी है और बड़े अर्थ में यह स्वयं जीवन का चरम उद्देश्य है। हमें लड़कियों, पिछड़े समुदायों, अल्पसंख्यकों और अनुसूचित जनजातियों के उच्च शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की भी जरूरत है। शिक्षा प्रयोगात्मक भी होनी चाहिए और वैसे नये विषयों की पढ़ाई होनी चाहिए, जो छात्र–छात्राओं के लिए विशेष उपयोगी हों।

राष्ट्र और समाज का निर्माण हमारी शिक्षण संस्थाएँ ही करती है। विद्या का लक्ष्य व्यक्ति और समाज को सामंजस्य सूत्र में बांधना है। हमें नैतिक और संस्कारवान होने के साथ ही व्यवहारिक जगत की सच्चाईयों को भी समझना है। जीविका और आजिविका का प्रश्न बड़ा है, पर मनुष्यता की रक्षा का प्रश्न भी कम बड़ा नहीं है। विनोबा भावे विश्वविद्यालय को केवल हजारीबाग क्षेत्र और झारखण्ड में ही नहीं, देश के नक्शे पर उत्कृष्ट विश्वविद्यालयों की सूची में भी हमें मिलकर लाना होगा। आपको नयी रेखाएँ खीचनी होंगी और नये चमकते रंग भरने होंगे। आकाश बड़ा करना होगा और संकीणताएँ छोड़नी होंगी।

दीक्षांत समारोह का अपना एक विशेष महत्व होता है। यह छात्र–छात्राओं के लिये एक अविस्मरणीय अवसर होता है, जहॅा से इनके भावी, जीवन में गुणात्मक परिवर्तन प्रारंभ होता है। वैसे सीखने के लिए तो सारा जीवन भी छोटा है परन्तु अपनी पढ़ाई के लिए जो अवस्था और समय आपके लिए निर्धारित थी, आपने उसका सदुपयोग किया, सफलता पायी, डिग्रियां प्राप्त की। अभी तक आप अपने माता–पिता, गुरुजन तथा ज्यशेठ लोगों के परामर्श से चलते रहे, परन्तु अब

आपको जीवन में अपना मार्ग स्वंय ढूंढ़ना है, बनाना है। शिक्षा ज्ञान का भंडार है किंतु दीक्षा विवेक का द्वार खोलती है। विवेक के बल पर ही जीवन में प्रगति के मार्ग निर्धारित होती है । मैं जानता हूँ कि डिग्रीधारक छात्र–छात्राओं के समक्ष उनका भविष्य खड़ा रहता है। लेकिन यह भी सच है कि सिर्फ डिग्रियाँ प्राप्त करने से ही शिक्षा का समापन नहीं होता, अपितु एक नयी यात्रा का आरंभ होता है। पूरी गति और वेग के साथ, विवेक और समझदारी के साथ वे अपना और समाज का विकास करें यही हमारी मंगलकामना है।

धन्यवाद,
जयहिन्द
जोहार !